Result Mitra IAS/PCS Daily Magazine Content

स्वामी विवेकानंद

➢ चर्चा में क्यों?

- 12 जनवरी को 19वीं सदी के प्रसिद्ध हिन्दू अध्यात्मिक नेता और बुद्धिजीवि स्वामी विवेकानंद की जयंती है।
- ***स्वामी विवेकानंद की जयंति के अवसर पर प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी को "राष्ट्रीय युवा दिवस" के रूप में मानया जाता है।
- ***स्वामी विवेकानंद के जयंति के अवसर पर "राष्ट्रीय युवा दिवस" मनाने को निर्णय भारत सरकार के द्वारा 1984 में लिया गया।
- पहली बार "राष्ट्रीय युवा दिवस" वर्ष 1985 में मनाया गया था।
- स्वामी विवेकानंद के जयंति को "राष्ट्रीय युवा दिवस" के रूप में मनाने का मुख्य उद्देश्य स्वामी विवेकानंद के विचारों और शिक्षाओं को युवाओं तक पहुँचाना है।

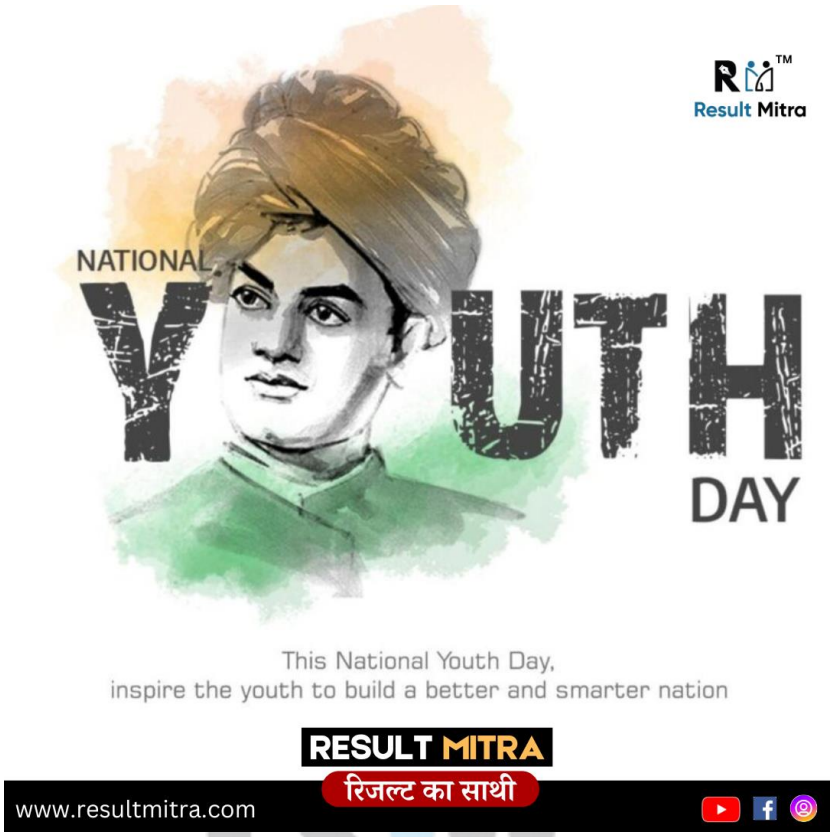

Result Mitra

➢ स्वामी विवेकानंद का प्रारंभिक जीवन

- स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 ई. को कलकतता में एक कुलीन कायस्थ परिवार में हुआ था।
- स्वामी विवेकानंद के पिता वियवनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के एक प्रसिद्ध वकील थे जबकि उनकी माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक विचार रखने वाली महिला थी।

- स्वामी विवेकानंद बचपन से ही काफी जिज्ञाशु एवं कुशाग्र बुद्धि के थे।
- स्वामी विवेकानंद की माता का धार्मिक प्रवृति के होने के कारण परिवार के धार्मिक एवं अध्यात्मिक वातावरण होने के कारण उनमें बचपन से ही धर्म एवं अध्यात्म के संस्कार गहरे होते गए।
- इन सबके कारण बालक नरेन्द्र दत्त के मन में बचपन से ही ईश्वर को जानने और उसे प्राप्त करने की लालसा दिखाई देने लगी।
- वर्ष 1871 ई. में 8 वर्ष की उम्र में नरेन्द्रनाथ ने ईश्वरचंद्र विद्यासागर के मेट्रोपोलिटन संस्थान में दाखिला लिया।
- 1879 ई. में स्वामी विवेकानंद ने कलत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज प्रवेश परीक्षा में प्रथम स्थान हासिल किया।
- स्वामी विवेकानंद को वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, रामायण, महाभारत सहित अनेक हिन्दू-शास्त्रों का गहन अध्यन किया।
- स्वामी विवेकानंद ने पश्चिमी तर्क, पश्चिमी दर्शन और यूरोपीय इतिहास का अध्ययन जनरल असेंबली इंस्टिट्यूशन में किया।
- स्वामी विवेकानंद ने 1884 ई. में कला से स्नातक की डिग्री पूरी की।

➢ अध्यात्मिक शिक्षा-

- ***1881 में भारत के ब्रहम समाज के संस्थापक केशवचंद्र सेन ने स्वामी विवेकानंद को बंगाल के महान रहस्यवादी संत रामकृष्ण परमहंस से मिलवाया।

- बाद में रामकृष्ण परमहंस ने स्वामी विवेकानंद को अपना शिष्य बना लिया।
- ***16 अगस्त 1886 में रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के बाद स्वामी विवेकानंद ने अपना जीवन हिन्दू सामाज के लिए समर्पित कर दिया।
- ***स्वामी विवेकानंद को यह नाम खेतड़ी के महाराजा ने दिया था।
- स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस से मिले द्वैतवादी दर्शन को अद्वैत दर्शन को अपने विश्वास के सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया।

➢ स्वामी विवेकानंद का व्यवहारिक वेदांत

- स्वामी विवेकानंद का मानना था कि द्वैतवाद वैश्विक स्तर पर इसिलिए फल-फूल रहा है क्योंकि इसे अशिक्षित जनता तक पहुँचाना आसान है।
- स्वामी विवेकानंद का कहना था कि यदि आप द्वैतवादी है तो आप भगवान की मदद करने की कोशिश करने वाले मुर्ख है एवं यदि आप अद्वैतवादी है तो आप जानते है कि आप भगवान है।
- अद्वैत दर्शन में प्रत्येक व्यक्ति अनंत सार्वभौमिक आत्मा का हिस्सा है इसिलिए दूसरे को नुकसान पहुँचाना खुद के नुकसान पहुँचाने के बराबर है।
- हालांकि स्वामी विवेकानंद के व्यवहारिक वेदांत ने द्वैतवाद और अद्वैतवाद सहित कई असंगत दर्शनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का काम किया ।

- स्वामी विवेकानंद के व्यवहारिक वेदांत का सार ईश्वर के प्रति समर्पण को साथी प्राणियों के प्रति करूणा के साथ एकीकृत करना था।
- स्वामी विवेकानंद ने भारत में धार्मिक ग्रंथों के प्रचार के स्थान पर गरीबी उन्मूलन को प्राथमिकता दी क्योंकि उनका मानना था कि भूख और गरीबी से पीड़ित लोगो के लिए वेदांत की सच्चाइयों की कोई अपील नहीं है।
- स्वामी विवेकानंद का मानना था कि धर्म खाली पेट रहने के लिए नहीं है।

➢ विश्वधर्म संसद

- 11 सितंबर 1893 को शिकागों में विश्व धर्म में स्वामी विवेकानंद का दिया गया भाषण हिन्दू पहचान के सार्वभौमिक दावे में एक महत्वपूर्ण मोड़ था।
- अपने भाषण में स्वामी विवेकानंद ने 19वीं सदी की भारत की कुछ पुमुख चिंताओं जैसी राष्ट्रीय जागृति, हिन्दू पहचान और धार्मिक सहिष्णुता को संबोधित किया।
- अपने इस ऐतिहासिक भाषण में उन्होंनें उदार और मानवीय हिन्दू धर्म को प्रगति और एकता का मार्ग प्रस्तुत किया।
- वास्तव में स्वामी विवेकानंद के भाषण का प्रमुख विषय धार्मिक सहिष्णुता था।

- स्वामी विवेकानंद ने हिंदू धर्म को सभी धर्मो की जननी कहकर इसकी सहिष्णुता और सार्वभौमिकता स्वीकृति की विरासत पर जोर दिया।
- स्वामी विवेकानंद ने दुनिया भर के उत्पीड़ित संप्रदयों को शरण देने में हिन्दू धर्म की ऐतिहासिक भूमिका पर प्रकाश डालते हुए पुष्टि की कि सहिष्णुता की भावना भारत के खून में अंतर्निहित है।
- स्वामी विवेकानंद ने हिंसा के कारण वाली कट्टरवाद संप्रदाय को सिरे से खारिज कर दिया।
- लेकिन उन्होनें स्वीकार किया कि लोगो के बीच धार्मिक मतभेद तब तक बने रहेंगें जब तक लोग एक दूसरे के धर्म के प्रति अनभिज्ञ रहेंगें।
- अपने शिकागो भाषण में स्वामी जी ने भूख से मर रहे लोगों की दुर्दशा को संबोधित करने के बजाय चर्चो (Churches) के निर्माण करने के लिए ईसाई मिशनरियों की आलोचना की।
- इस धर्म संसद के समापन सत्र में उन्होनें धर्म एकमात्र अस्तित्व की कल्पना करने वालो के प्रति खेद प्रगट करते हुए कहा कि सच्चा धर्म अनेकता में एकता को अपनाता है।
- विश्व धर्म संसद में दिए स्वामी जी के भाषण के इस व्याख्यान ने अमेरिका में दर्शको को प्रभावित किया एवं अगले तीन वर्षो तक पश्चिम के देशों में प्रचार और व्याख्यान देने में बिताए।
- 1897 में भारत लौटकर उन्होनें रामकृष्ण मिशन की स्थापना की जो मुख्य रूप से सामाजिक सेवा और उपदेश के माध्यम से काम करता था।

➢ स्वामी विवेकानंद:- आधुनिक भारत के देशभक्त संत

- स्वामी विवेकानंद की अध्यात्मिक अवधारणा ने बालगंगाधर तिलक, सुभाषचंद्र बोस और महात्मा गांधी सहित भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं को प्रभावित किया।
- 19वीं शताब्दी तक उन्होनें हिन्दू रहस्यवाद और अध्यात्मिकता के बीच जनता में राष्ट्रीय भावना पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- स्वामी विवेकानंद का मानना था कि स्वशासन की कमी भारतीयों की गुलामी का एक प्रमुख कारण था।

➢ राष्ट्रवाद पर विचार-

- स्वामी विवेकानंद का मानना था कि प्रत्येक राष्ट्र का एक केन्द्र होता है और अस्तित्व इस केन्द्र को संरक्षित करने में निर्भर होता है।
- उन्होनें भारत के केन्द्र को धर्म के रूप में पाया।
- स्वामी विवेकानंद का मानना था कि भारत के पश्चिम के भौतिकवाद के प्रमुख मुकाबला करने के लिए भारत की अध्यात्मिक स्वतंत्रता महत्वपूर्ण थी तथा उन्होनें भारत को फिर से जीवित करने के लिए अध्यात्मिकता की लहर शुरू करने का आग्रह किया।
- स्वामी विवेकानंद ने भारत को विश्व की अध्यात्मिकता का केन्द्र बताकर इसे अपनी अध्यात्मिक शक्ति के माध्यम से दुनिया को जीतने में सक्षम माना।

- स्वामी विवेकानंद ने वेदान्तिक अध्यात्मवाद को भारत की पराधीनता के सामाधान और मानवता को पश्चिमी भौतिकवाद के विनाशकारी प्रभावों से बचाने के साधन के रूप में देखा।
- स्वामी विवेकानंद का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता या धर्मिक सुधार के लिए अध्यात्मिकता और धर्म की अनदेखी करने वाला कोई भी प्रयास राष्ट्र के लिए एक श्राप के समान है।

➢ स्वामी विवेकानंद के चार मार्गो पर विचार-

स्वामी विवेकानंद ने अपनी पुस्तकों में सांसारिक सुख और आसक्ति से मोक्ष प्राप्त डरने के चार मार्गो (कर्म योग, भक्ति योग, राज योग और ज्ञान योग) के बारे में बात की।

*कर्मयोग-

- स्वामी विवेकानंद ने कर्म की महत्ता पर बल देते हुए कहा कि कर्म से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।
- स्वामी विवेकानंद ने कहा कि बहुत से लोग कर्म रहस्य से अनभिज्ञ होते है तथा कर्म के रहस्य की कुंजी है कि अपने काम अपनी सारी उर्जा को अधिकतम लाभ के लिए नियोजित किया जाय।

*भक्तियोग-

- स्वामी विवेकानंद के अनुसार भक्ति योग सिखाता है कि प्रेम सभी मनुष्यों का एक महत्वपूर्ण तत्व है।
- भक्तियोग यह सिखलाता है कि बिना किसी गुप्त उद्देश्य के प्रेम कैसे किया जाता है इसीलिए प्रेम ही जीवन का एकमात्र नियम है।

***राजयोग-**

- स्वामी विवेकानंद के अनुसार राज योग ईश्वर से मिलन का मनोवैज्ञानिक मार्ग खोलता है।

***ज्ञानयोग-**

- स्वामी विवेकानंद के अनुसार ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान के अंधकार को मिटाकर मन की सभी अशुद्धियों को जलाकर प्रकाश को जीवित किया जा सकता है।
- ज्ञान योग के अनुसार आत्मज्ञान ही सच्ची मुक्ति है।

Note:- 4 जुलाई 1902 ई. को 39 वर्ष की अवस्था में बलुर मठ (अब बेलूर पश्चिम बंगाल) में स्वामी विवेकानंद का देहांत हो गया।

मुख्य परीक्षा- 1. 19वीं सदी के भारत में राष्ट्रीय भावना को बढ़ावा देने में हिन्दू रहस्यवादी और अध्यात्मिकता ने क्या भूमिका निभाई?

2. स्वामी विवेकानंद की अध्यात्मिक राष्ट्रवाद की अवधारणा ने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं को कैसे प्रभावित किया?

हम आपको रिजल्ट देने आये हैं.

Result Mitra

1- UPSC(IAS) COMPLETE GS -5999 ₹.
2- NCERT for IAS/PCS -2499 ₹
3- ESSAY for IAS/PCS- 2199 ₹
4- UPSC PRELIMS TEST SERIES - 1399 ₹
5- सभी राज्यों के लिए टेस्ट सीरीज - 1399 ₹

कोर्स या Test Series के लिए
WhatssApp कीजिये
9235313184, 9235446806

स्टार पॉइंट वाले पैराग्राफ प्रीललम्स एग्जाम के ललए अति महत्वपूर्ण हैं

Result Mitra